B.M.A College Baheri Darbhanga (LNMU)
BA(Hons) Part-II Part-IV Economics

1
24-11-2020

Dr. S.K. Singh.
Dept of Economics

भारत में बड़े व्यापारिक घरानों के परिवारों की हिस्सेदारी,

सभी बड़े औद्योगिक घरानों के परिवार के हिस्सेदारों के बारे में पर्याप्त सूचना उपलब्ध नहीं है परन्तु कुछ उच्च औद्योगिक घरानों के बारे में सरकार ने कुछ सूचना उपलब्ध कराई है।

करोड़ रुपये

	1972	1981	1989-90	1972 और 1989-90 के बीच औसत-वार्षिक वृद्धि
टाटा	642	1,840	8,531	15.5
बिड़ला	589	1,692	8,473	16.0
रिलाइ-स	—	271	3,600	33.3
बापा	136	430	2,177	16.7
जे.के. सिंघानिया	121	520	2,139	17.3
लारसेन एंव टूब्रो	79	220	1,682	18.5
मोदी	58	242	1,399	19.3
बजाज	63	215	1,391	18.8
मफतलाल	184	535	1,344	11.7
एम. ए. चिदम्बरम	—	—	1,273	10.5
हिन्दुस्तान लीवर	78	247	1,209	16.4
थूनाइटेड ब्रिवरीज	36	—	1,189	21.4
टी वी. एस आयंगर	51	227	1,177	19.1
आई. टी. सी.	75	—	965	15.2
श्री राम	121	269	934	12.0
ए. सी. सी	134	343	903	11.2
ओसवाल ग्रो	—	—	870	—
महेन्द्रा एंव महेन्द्रा	58	480	774	15.5
ईसर	—	—	756	173.0
किर्लोस्कर	86	398	736	12.7
कुल	2,511	7,857	41,522	16.9

Basic Statistics Relating to the Indian Economy
August- 1993

Page No. 1
Date 24-11-2020

Dr. S.K. Singh
Dept of Economics

मुद्रा का माँग फलन,
(Demand Function of Money)

मुद्रा का माँग फलन बताता है कि विभिन्न परिसम्पत्तियों की प्रत्याशित प्राप्तियों में वृद्धि होने से एवं सम्पत्ति धारक की मुद्रा की माँग कम हो जाती है और सम्पत्ति में वृद्धि से मुद्रा की माँग बढ़ जाती है। आय जिन नकदी शेषों के साथ समायोजित की जाती है, वह आय का प्रत्याशित दीर्घकालीन स्तर है, न कि प्राप्त हो रही चालू आय। फ्रिडमैन के मुद्रा के परिमाण सिद्धांत के मूल प्रस्तुतिकरण में मुद्रा की पूर्ति मुद्रा की माँग से स्वतंत्र है। मुद्रा अधिकारियों के कार्यों के कारण मुद्रा की पूर्ति आत्मनिर्भर होती है। दूसरी ओर, मुद्रा की माँग स्थिर रहती है। इसका मतलब है कि वह मुद्रा जिसे लोग नकदी अथवा बैंक जमा के रूप में रखना चाहते हैं, स्थिर रूप में उनकी स्थायी आय से संबंधित रहती है। यदि केन्द्रीय बैंक प्रतिभूतियाँ खरीदकर मुद्रा की पूर्ति बढ़ा देगा, तो जो लोग प्रतिभूतियाँ बेचेंगे वे देखेंगे कि उनकी आय के अनुपात में उनके मुद्रा के धारण बढ़ गए हैं। इसलिए वे अपने मुद्रा के अधिकांश धारणों को आंशिक रूप से परिसम्पत्तियों पर और आंशिक रूप से उपभोक्ता वस्तुओं तथा सेवाओं पर खर्च करेंगे। दूसरी ओर, जब केन्द्रीय बैंक प्रतिभूतियाँ बेचकर मुद्रा की पूर्ति घटा देगा, तो प्रतिभूतियाँ खरीदने वालों के मुद्रा के धारण उनकी स्थायी आय के अनुपात में कम हो जाएंगे। इसलिए वे आंशिक रूप से परिसम्पत्तियों को बेचकर और आंशिक रूप से वस्तुओं तथा सेवाओं पर अपना उपभोग व्यय कम करके अपने मुद्रा धारणों को बढ़ायेंगे। इससे मुद्रा रूप आय घटने लगेगी। इसी प्रकार दोनों तरह से मुद्रा की माँग स्थिर रहती है।

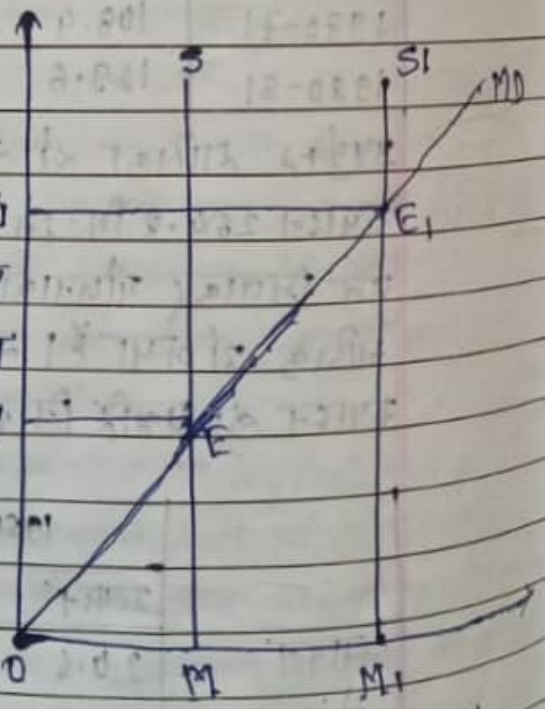

Demand and Supply of money

B.M.A College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A (Hons) Part-I Paper-II Economics

1
24-11-2020

Dr. S.K. Singh.
Deptt of Economics

राष्ट्रीय कृषि नीति
(NATIONAL AGRICULTURAL POLICY)

सर्वप्रथम 22 दिसम्बर 1992 को कृषि नीति का प्रस्ताव संसद के समक्ष प्रस्तुत किया गया। इसमें इन बातों का उल्लेख किया गया : (1) कृषि को उद्योगों के समान सुविधा देना,
(2) कृषि मे सरकारी हस्तक्षेप को समाप्त करना,
(3) केन्द्र की भूमिका, नीति और दिशा निर्देशों को सीमित करना,
(4) कृषि नीति का क्रियान्वयन राज्य सरकारो पर,
(5) आधुनिक कृषि तकनीको का व्यापक प्रयोग,
(6) कृषि क्षेत्रों के आधारभूत ढाचे के लिए सरकारी एंव गैर-सरकारी संसाधनो का उपयोग करना,
(7) कृषि के सहायक उद्योगों को बढ़ावा देना,
(8) महंगे बिकने वाले कृषि पदार्थों के उत्पादन को प्रोत्साहन देना,
(9) किसानों को कर वसूली एंव नियमो से दूरी करना,
(10) सिंचाई सुविधाओं का अधिक उपयोग करना,
(11) कृषि विकास मे गैर-सरकारी संस्थाओ की भूमिका बढ़ाना।

14 मई 1993 मे इसमें एक बात और जोड़ी गई - यदि किसानों की भूमि अनिवार्य रूप से अधिग्रहीत की जाती है तो उन्हें पूंजी लाभ कर से छूट होगी, साथ ही किसानों को उनकी उपज का उचित मुल्य देने का भी सरकारी आश्वासन दिया गया।

जुलाई 2000 के अन्तिम सप्ताह मे भारत सरकार ने अपनी राष्ट्रीय कृषि नीति घोषित की है। इस नीति दस्तावेज मे कुल 48 अनुच्छेद है जो उद्देश्य, दीर्घकालीन कृषि, खाद्य एंव पोषण सुरक्षा, प्रौद्योगिकी सृजन एंव हस्तान्तरण, आदान प्रबंध, कृषि के लिए प्रोत्साहन, कृषि निवेश, संस्थागत संरचना, जोखिम प्रबन्ध, व प्रबन्ध सुधार नामक मदों मे विभाजित है

(1) उद्देश्य - राष्ट्रीय कृषि नीति में भारतीय कृषि की विशाल अदोहित समता को वास्तविक रूप देने तीव्रतर कृषि विकास को समर्थन देने के लिए ग्रामीण अवसंरचना को सुदृढ़ करने, मूल्य प्रवर्धन को बढ़ावा देने, कृषि व्यवसाय की वृद्धि को तीव्रता प्रदान करने, ग्रामीण क्षेत्रों मे रोजगार का सृजन करने, किसानो, कृषि मजदूरो और उनके परिवारो का जीवन स्तर सुधारने,

Dr S.K. Singh.
Deptt of Economics

उपयोगिता का अभिप्राय

Meaning of Utility

उपयोगिता का अर्थ है आवश्यकता सन्तुष्टि शक्ति (Want Satisfying power) दूसरे शब्दों में वस्तु विशेष में किसी उपभोक्ता की आवश्यकता विशेष की सन्तुष्टि की निहित क्षमता अथवा शक्ति (capacity or power) का नाम नाम ही उपयोगिता है। प्रत्येक वस्तु में कोई-न-कोई ऐसी विशेषता अवश्य निहित रहती है जिसके कारण उपभोक्ता उसकी मांग करता है। लाभदायक (Helpful) एवं हानिकारक (Harmful) दोनों है, इस प्रकार की वस्तुओं में उपयोगिता हो सकती है। एक वस्तु की उपयोगिता सभी व्यक्तियों के लिए समान नहीं होती। उपयोगिता शब्द सापेक्षिक (relative) है। मादक पदार्थ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हुए भी मादक पदार्थ भोगी व्यक्ति के लिए उपयोगिता रखते हैं। वस्तु के उपभोग की इच्छा उपयोगिता को जन्म देती है प्रो० फ्रेजर के शब्दों में उपयोगिता केवल इच्छा करना है। (Utility is simply desiredness) इस प्रकार अनैतिक कार्य जैसे, चोरी, डकैती, आदि भी किसी व्यक्ति विशेष को उपयोगिता दे सकते हैं। उपयोगिता 'इच्छा कि तीव्रता का फलन होती है (Utility is a function of intensity of want) उपभोक्ता में किसी वस्तु विशेष के प्रति उपभोग की तीव्रता (intensity of consumption) जितनी अधिक होगी, उपभोक्ता को उस वस्तु के उपभोग से उतनी ही अधिक उपयोगिता प्राप्त होगी। जैसे जैसे उपभोक्ता किसी वस्तु विशेष का उपभोग करता चला जाता है उसके उपभोग की इच्छा की तीव्रता कम होती चली जाती है। उपयोगिता (Utility) एवं सन्तुष्टि (Satisfaction) दोनों मनोवैज्ञानिक विचार हैं, फिर भी दोनों में एक बिन्दु पर भिन्नता है। उपयोगिता का अर्थ जहां हम 'अनुमानित सन्तुष्टि (expected satisfaction) से लेते हैं वहीं सन्तुष्टि का अभिप्राय वास्तविक रूप से अनुभव की गई सन्तुष्टि (actually realised satisfaction) से लिया जाता है। वास्तविक सन्तुष्टि अनुमानित सन्तुष्टि से कम, अधिक अथवा बराबर हो सकती है आधुनिक अर्थशास्त्रीय उपयोगिता का अर्थ अनुमानित सन्तुष्टि से लगाते हैं क्योंकि अनुमानित सन्तुष्टि उपभोग कि तीव्रता पर निर्भर करती है

Dr S.K. Singh.
Deptt of Economics

उपयोगिता का अभिप्राय

Meaning of Utility

उपयोगिता का अर्थ है आवश्यकता सन्तुष्टि शक्ति (Want Satisfying power) दूसरे शब्दों में वस्तु विशेष में किसी उपभोक्ता की आवश्यकता विशेष की सन्तुष्टि की निहित क्षमता अथवा शक्ति (capacity or power) का नाम नाम ही उपयोगिता है। प्रत्येक वस्तु में कोई न कोई ऐसी विशेषता अवश्य निहित रहती है जिसके कारण उपभोक्ता उसकी मांग करता है। लाभदायक (Helpful) एवं हानिकारक (Harmful) दोनों है, इस प्रकार की वस्तुओं में उपयोगिता हो सकती है। एक वस्तु की उपयोगिता सभी व्यक्तियों के लिए समान नहीं होती। उपयोगिता शब्द सापेक्षिक (relative) है। मादक पदार्थ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हुए भी मादक पदार्थ भोगी व्यक्ति के लिए उपयोगिता रखते है। वस्तु के उपभोग की इच्छा उपयोगिता को जन्म देती है। प्रो० फ्रेजर के शब्दों में उपयोगिता केवल इच्छा करना है। (Utility is simply desirableness) इस प्रकार अनैतिक कार्य जैसे, चोरी, डकैती, आदि भी किसी व्यक्ति विशेष को उपयोगिता दे सकते है। उपयोगिता 'इच्छा कि तीव्रता का फलन होती है (Utility is a function of intensity of want) उपभोक्ता में किसी वस्तु विशेष के प्रति उपभोग की तीव्रता (intensity of consumption) जितनी अधिक होगी, उपभोक्ता को उस वस्तु के उपभोग से उतनी ही अधिक उपयोगिता प्राप्त होगी। जैसे जैसे उपभोक्ता किसी वस्तु विशेष का उपभोग करता चला जाता है उसके उपभोग की इच्छा की तीव्रता कम होती चली जाती है। उपयोगिता (Utility) एवं सन्तुष्टि (Satisfaction) दोनों मनोवैज्ञानिक विचार है, फिर भी दोनों में एक बिन्दु पर भिन्नता है। उपयोगिता का अर्थ जहा हम 'अनुमानित सन्तुष्टि (expected satisfaction) से लेते है वही सन्तुष्टि का अभिप्राय वास्तविक रूप से अनुभव की गई सन्तुष्टि (actually realised satisfaction) से लिया जाता है। वास्तविक सन्तुष्टि अनुमानित सन्तुष्टि से कम, अधिक अथवा बराबर हो सकती है आधुनिक अर्थशास्त्रीय उपयोगिता का अर्थ अनुमानित सन्तुष्टि से लगाते है क्योंकि अनुमानित सन्तुष्टि उपभोग कि तीव्रता पर निर्भर करती है